Vol 6 Issue 9 Oct 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

# *Indian Streams Research Journal*

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

**Welcome to ISRJ**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

**Regional Editor**

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

## *International Advisory Board*

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

## *Editorial Board*

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org**

ISSN: 2230-7850 Impact Factor :4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 9 | October - 2016

Indian Streams Research Journal

# उत्तर मुग़लकालीन शासक,सिक्ख प्रतिरोध एवं मध्य हिमालयी क्षेत्र : एक सामरिक–कूटनीतिक अध्ययन (सन 1707–1719 ई.)

प्रवेश कुमार
प्रवक्ता , इतिहास, विद्यादीप डिग्री कालेज,बिलासपुर,सहारनपुर,उ.प्र.

**सारांश–**
उत्तर मुग़लकालीन शासक बहादुरशाह शाहआलम प्रथम के शासनकाल में पंजाब तथा उसके निकटवर्ती मध्य हिमालयी पर्वतीय क्षेत्र में मुग़ल सत्ता के प्रतिरोध हेतु गुरू गोविन्दसिंह के परम शिष्य बन्दाबहादुर के नेतृत्व में सिक्खों ने सशस्त्र संघर्ष आरम्भ किया। यह संघर्ष बहादुरशाह शाहआलम प्रथम जहाँदारशाह तथा फर्रुख़सियर(सन १७०७-१७१९)के शासनकाल में जारी रहा। मध्य हिमालयी क्षेत्र भी मुग़ल प्रभुत्व से मुक्त होना चाहते थे,अतः उन्होंने भी मुग़ल सत्ता के प्रतिरोध हेतु संघर्षरत सिक्खों और उनके समर्थक गुज्जरों,जाटों एवं बंजारों के साथ सहयोग करना आरम्भ कर दिया। फलस्वरूप पंजाब तथा उसके निकटवर्ती मध्य हिमालयी क्षेत्र में मुग़ल प्रभुत्व के लिए गम्भीर संकट उत्पन्न हो गया। मुग़ल सत्ता के विरुद्ध हुए इस सशस्त्र प्रतिरोध के दमनार्थ मुग़ल शासकों द्वारा किये गये समरिक-कूटनीतिक एवं प्रशासनिक उपायों और उनके प्रतिफलन का अध्ययन-विश्लेषण प्रस्तुत शोध-पत्र में किया गया है।

**प्रस्तावना–**
पश्चिमी एवं पूर्वी हिमालयी क्षेत्र के मध्य में स्थित लगभग ५४,००० वर्ग कि०मी० का पर्वतीय अंचल मध्य हिमालयी क्षेत्र कहलाता है। पन्द्रहवीं शताब्दी से अट्ठारहवीं शताब्दी तक इस मध्य हिमालयी क्षेत्र में सिरमौर, गढ़वाल एवं कुमाऊँ नामक तीन पर्वतीय राज्य अवस्थित थे। यद्यपि सन् १५५६ से १७०७ की अवधि में भी इस पर्वतीय अंचल के क्षेत्रो ने मुग़ल वर्चस्व से मुक्त होने के लिए प्रयास किये,परन्तु उक्त अवधि में मुग़ल शासक अत्यधिक शक्तिशाली तथा संसाधन सम्पन्न थे,अतः उन्हें इन तीनों पर्वतीय राज्यों पर अपना वर्चस्व बनाये रखने में विशेष कठिनाइयाँ नहीं हुईं,परन्तु औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात् राजनीतिक परिदृश्य पूर्णतया बदल गया। उसके पुत्रों के बीच हुए उत्तराधिकार संघर्ष, दरबारियों की दलबंन्दियों, विज़ारत प्राप्ति के लिए अमीरों के बीच शक्ति-प्रदर्शन तथा साम्राज्य के विकेन्द्रीकरण के लिए सक्रिय तत्वों की शक्ति में वृद्धि आदि के कारण उत्तर मुग़लकालीन शासक दुर्बल हो गये। अतः मध्य हिमालयी क्षत्रपों ने उनके प्रभुत्व की उपेक्षा आरम्भ कर दी। आरम्भिक उत्तर मुग़लकालीन शासकों बहादुरशाह शाहआलम प्रथम के शासनकाल से फर्रुख़सियर के शासनकाल(सन १७०७-१७१९)तक की अवधि में इन पर्वतीय राज्यों के निकटवर्ती पंजाब के मैदानी इलाके में गुरू गोविन्दसिंह के शिष्य बन्दाबहादुर के नेतृत्व में आरम्भ हुए सिक्ख प्रतिरोध ने इन मुग़ल शासकों की समस्याओं में और अधिक वृद्धि कर दी। फलस्वरूप उनके लिए इन पर्वतीय राज्यों पर अपना वर्चस्व बनाये रखना और अधिक कठिन हो गया।

औरंगज़ेब के शासनकाल के अन्तिम वर्षों में सिक्ख गुरू गोविन्दसिंह ने पंजाब के मैदानी इलाकों की अपेक्षा मध्य हिमालयी क्षेत्र को अपने लिए अधिक सुरक्षित समझ कर सिरमौर एवं गढ़वाल के राजाओं के साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित कर इन दोनों राज्यों के बीच स्थित पौंटा नामक स्थान पर एक दुर्ग बनाकर वहाँ आवास करना आरम्भ कर दिया था।[१] कतिपय अन्य पर्वतीय राजा, जो अपने राज्यों के निकट सिक्ख शक्ति की उपस्थिति को अपने अस्तित्व के लिए संकट मान रहे थे,उन्होंने गुरू गोविन्दसिंह,सिरमौर तथा गढ़वाल के राजाओं के इस गठजोड़ से मुग़ल दरबार को अवगत कराया। औरंगज़ेब उस समय दक्षिण भारत में था। सिरमौर, गढ़वाल एवं गुरू गोविन्दसिंह के बीच एक गुट बनता देख औरंगज़ेब का चिंतित होना स्वाभाविक था, वह भी एक ऐसे दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र में, जहाँ मुग़ल सेना का त्वरित गति से पहुँच पाना भी दुष्कर था। अतः औरंगज़ेब ने सिरमौर एवं गढ़वाल के राजाओं को आदेश दिया

कि वह गुरू गोविन्दसिंह को अपने इलाकों से बाहर कर दें। फलस्वरूप गुरू गोविन्दसिंह पौंटा से आनन्दपुर नामक स्थान पर आ गये।[२] आनंदपुर नामक स्थान कहलूर के राजा के अधीन भू-प्रदेश में था और कहलूर तथा सिरमौर के सम्बन्ध शत्रुतापूर्ण थे, जबकि सिरमौर के राजा तथा गुरू गोविन्दसिंह के बीच मित्रता थी। अतः कहलूर का राजा चिंतित हो गया। उसने औरंगज़ेब से गुरू गोविन्दसिंह को आनन्दपुर से निष्कासित करने के लिए सैनिक सहायता मांगी। अंततः गुरू गोविन्दसिंह को आनन्दपुर छोड़ना पड़ा।[३]

गुरू गोविन्दसिंह ने औरगंज़ेब से भेंट करके आनन्दपुर पुनः प्राप्त करने का निश्चिय किया और दक्षिण भारत की ओर प्रस्थान किया,परन्तु इससे पूर्व ही औरंगज़ेब की मृत्यु हो गई।वहीं नाँदेड़ नामक स्थान पर एक पठान ने गुरू गोविन्दसिंह की हत्या कर दी।[४] गुरू गोविन्दसिंह की हत्या का बदला लेने, मुग़ल वर्चस्व से मुक्त होने तथा सिक्ख प्रभुत्व की स्थापना के लिए गुरू गोविन्दसिंह के एक प्रबल अनुयायी बन्दाबहादुर ने बड़ी संख्या में सिक्खों को एकत्रित कर मुग़ल सत्ता का प्रतिरोध आरम्भ कर दिया।[५] सिक्ख सैनिकों ने पंजाब के मैदानी क्षेत्रों बारी दोआब तथा सरहिन्द में व्यापक स्तर पर लूटमार की और दिल्ली से पंजाब का सम्पर्क काट देने के उद्देश्य से सरहिन्द से दिल्ली जाने वाले मार्ग पर अधिकार करने का प्रयास किया। सरहिन्द के फौजदार वज़ीर ख़ाँ ने उन्हें रोकने का प्रयत्न किया, परन्तु उन सिक्ख सैनिकों ने मुग़ल सेना को पराजित कर दिया और वज़ीर ख़ाँ की हत्या कर दी।[६]

मुग़ल सेना द्वारा पीछा किये जाने पर सिक्ख सेनानायक बन्दाबहादुर ने अपने सैनिकों सहित सरहिन्द से ऊपर स्थित पर्वतीय राज्य सिरमौर में लोहागढ़ नामक स्थान पर शरण ले ली। बन्दाबहादुर की इन आरम्भिक सफलताओं से प्रभावित होकर सिरमौर के राजा भूपप्रकाश ने उसके साथ सहयोग करना आरम्भ कर दिया। मुग़ल शासक बहादुरशाह शाहआलम प्रथम ने सिरमौर के राजा को आदेश कि वह बन्दाबहादुर के साथ सहयोग न करे और उसके दमन अभियान में मुग़ल सेना का साथ दे, परन्तु सिरमौर का राजा मुग़ल सेना के साथ सहयोग का केवल दिखावा ही करता रहा। वास्तव में उसने दुरभि नीति अपनाई और बन्दाबहादुर तथा मुग़ल शासक दोनों को ही सन्तुष्ट करने का प्रयास किया। सिरमौर के राजा के इस व्यवहार को देखकर मुग़ल शासक ने सिरमौर के पड़ौसी गढ़वाल के राजा फतेहसिंह को बन्दाबहादुर के विरुद्ध कार्रवाई करने के आदेश दिये, परन्तु उसने भी कोई कार्रवाई नहीं की। अन्ततः मुग़ल सेना द्वारा लोहागढ़ की घेराबन्दी किये जाने पर बन्दाबहादुर अपने सैन्यदल सहित सिरमौर के राजा के अधीन प्रदेशों से सकुशल निकल भागने में सफल रहा।[७]

यह सूचनायें प्राप्त होने पर कि सिरमौर के राजा की सहायता से ही बन्दाबहादुर और उसके समर्थक मुग़ल सेना की घेराबन्दी से निकल भागे हैं, मुग़ल शासक बहादुरशाह शाहआलम प्रथम ने बन्दाबहादुर के दमन अभियान हेतु नियुक्त मुग़ल सेनानायक को आदेश दिया कि वह सिरमौर की राजधानी नाहन पर आक्रमण करे और सिरमौर के राजा को बन्दी बना कर दिल्ली भेजे। मुग़ल सेना ने सिरमौर के राजा को बन्दी बनाकर दिल्ली भेज दिया। उसे सलीमगढ़ स्थित कारागार में डाल दिया गया।[८] मुग़ल शासक द्वारा सिक्खों के समर्थक सिरमौर के राजा को बन्दी बना लिए जाने, बन्दाबहादुर के दमनार्थ त्वरित एवं अनवरत सैनिक कार्रवाइयों आदि को देख कर गढ़वाल का राजा सशंकित हो गया कि कहीं मुग़ल सत्ता के विरोधी सिक्खों से सहानुभूति रखने के कारण मुग़ल सेना उसके विरुद्ध भी कार्रवाई न कर दे। अतः उसने पेशकश एवं नज़राना आदि भेज कर उस समय तो मुग़ल शासक के साथ सम्बन्ध सुधार लिए, परन्तु सन् १७११-१२ में उसने पुनः मुग़ल सत्ता का प्रतिरोध कर रहे सिक्खों को अपने राज्य में शरण प्रदान कर मुग़ल शासक को क्रोधित कर दिया।[९]

उस समय तक कुमाऊँ के राजा ने अपने राज्य में छिपे हुए कुछ विद्रोहियों को पकड़ कर मुग़ल शासक के साथ मधुर सम्बन्ध बनाये लिए थे,[१०] परन्तु मुग़ल शासक इन तीनों पर्वतीय क्षत्रपों की दुरभि नीतियों से कुपित हो गया था और इनको पूर्व की भांति मुग़ल प्रभुत्व स्वीकार करने के लिए बाध्य करना चाहता था। अतः उसने इन पर्वतीय राजाओं के आर्थिक संसाधनों में कटौती कर, इनकी आय में कमी करके, इन्हें दुर्बल बनाने और मुग़ल शासक की कृपा पर आश्रित करने के लिए इन राजाओं से उन भू-प्रदेशों को वापस ले लिए जाने का निर्णय लिया, जो भू-प्रदेश इन राजाओं को सम्राट अकबर के समय से औरंगज़ेब के समय तक इनाम जागीरों आदि के रूप में प्रदान किये गये थे। अपनी इस नीति को कार्य रूप देने से पूर्व ही फरवरी, सन् १७१२ में मुग़ल शासक बहादुरशाह शाहआलम प्रथम की मृत्यु हो गई।[११]

बहादुरशाह शाहआलम प्रथम के उत्तराधिकारी जहाँदारशाह (सन् १७१२-१७१३) ने मध्य हिमालयी क्षत्रपों के प्रति बहादुरशाह शाहआलम प्रथम की अपेक्षा उदार नीति अपनाई और उनके साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने की दिशा में पहल करते हुए सिरमौर के राजा भूपप्रकाश को कारागार से मुक्त कर दिया।[१२] भूपप्रकाश ने मुग़ल शासक जहाँदारशाह को वचन दिया कि वह बन्दाबहादुर और उसके समर्थकों के दमन अभियान में मुग़ल सेना के साथ सहयोग करेगा। उसने वास्तव में बन्दाबहादुर के दमन अभियान में मुग़ल सेनाओं के साथ सहयोग किया और मुग़ल सत्ता के प्रतिरोधी सिक्खों को सिरमौर राज्य से भागना पड़ा।[१३] कुमाऊँ के राजा ने भी विरोधियों के प्रति कठोर कार्रवाइयाँ करके उन्हें अपने इलाकों से निकाल दिया, परन्तु गढ़वाल का राजा पूर्व की भांति विरोधी सिक्खों, गुज्जरों एवं जाटों को शरण प्रदान करता रहा।[१४] इससे पूर्व कि मुग़ल शासक जहाँदारशाह गढ़वाल के राजा के विरुद्ध कोई कार्रवाई करता, उसका तख़्ता पलट हो गया और फर्रुख़सियर ने सत्ता पर अधिकार कर लिया।[१५]

फर्रुख़सियर (सन् १७१३-१७१६) ने मुग़ल प्रभुत्व की उपेक्षा कर मुग़ल सत्ता के विरोधियों को सहायता प्रदान कर रहे इन पर्वतीय क्षेत्रों के प्रति कठोर नीति अपनाई। उसने इनके अधीन भू-प्रदेशों में कटौती करने की बहादुरशाह शाहआलम प्रथम की नीति पर अमल करना आरम्भ किया।[१६] फलस्वरूप सिरमौर एवं कुमाऊँ के राजाओं ने दुरभि नीतियों को छोड़ कर मुग़ल शासक के प्रति पूर्ण सहयोग करना आरम्भ कर दिया, परन्तु गढ़वाल का राजा मुग़ल सत्ता के उन विरोधियों को शरण प्रदान करता रहा, जो गढ़वाल के पर्वतीय प्रदेशों में छिपे हुए थे और वहाँ से निकल कर सम्भल तथा मुरादाबाद के सीमावर्ती इलाकों में अराजकता फैला रहे थे। गढ़वाल के राजा के अधीन दून घाटी में भी मुग़ल सत्ता के विरोधी सक्रिए थे और वह सहारनपुर तक लूटमार कर रहे थे।[१७] मुग़ल सेना द्वारा पीछ किये जने पर वह गढ़वाल के पर्वतीय प्रदेश में शरण ले लेते थे। मुग़ल सेना इन विद्रोहियों के दमन के लिए सहारनपुर एवं देहरादून से मिलने वाली गढ़वाल की दक्षिणी-पश्चिमी सीमा पर सैनिक अभियान कर सकती थी। अतः गढ़वाल के राजा ने अपनी अधिकांश सेना इस सीमा पर तैनात कर दी। फलस्वरूप कुमाऊँ के साथ लगने वाली गढ़वाल की पूर्वी सीमा असुरक्षित हो गई।

मुग़ल शासक फर्रुख़सियर ने शाहजहाँ एवं औरंगज़ेब की नीति का अनुसरण करते हुए गढ़वाल के राजा पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से कुमाऊँ के राजा जगतचन्द को गढ़वाल पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया। अन्ततः सन् १७१३ में कुमाऊँ के राजा ने गढ़वाल पर आक्रमण किया और उसे मुग़ल सम्राट के सम्मुख समर्पण करने के लिए बाध्य कर दिया।[१८] फलस्वरूप गढ़वाल के राजा ने मुग़ल सत्ता के विरोधियों के साथ न केवल सहयोग करना बन्द कर दिया, बल्कि देहरादून से उन्हें खदेड़ने के लिए अपनी सेना भेज कर मुग़ल सेना के साथ सहयोग भी किया।[१९]

सन् १७१५ के मध्य तक गढ़वाल, सिरमौर एवं पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र के अधिकांश क्षत्रपों ने मुग़ल सत्ता के विरोधी सिक्खों एवं उनके समर्थकों का साथ छोड़ दिया। फलस्वरूप मुग़ल सत्ता के विरुद्ध संघर्षरत सिक्ख सेनानायक बन्दाबहादुर ने ७ दिसम्बर, सन् १७१५, को गुरूदासपुर में मुग़ल सेना के सम्मुख समर्पण कर दिया।[१९] इस प्रकार सन् १७०८ में आरम्भ हुए मुग़ल सत्ता के प्रतिरोध के कारण इस पर्वतीय अंचल में जो अराजकता फैली थी,सन् १७१५ में उस पर मुग़ल शासक फर्रुख़सियर ने नियन्त्रण स्थापित कर लिया।

सन् १७०७ से १७१९ तक, बहादुरशाह (प्रथम) से फर्रुख़सियर के शासनकाल में मध्य हिमालयी क्षेत्र के पर्वतीय राज्यों एवं मुग़ल शासकों के सम्बन्धों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात मुग़ल साम्राज्य में अराजकता का जो वातावरण उत्पन्न हुआ उससे उन शक्तियों ने लाभ उठाने का प्रयास किया जो मुग़ल प्रभुत्व से मुक्त होना चाहते थे। इसी क्रम में पंजाब के मैदानी इलाके में गुरू गोविन्दसिंह की हत्या से आक्रोषित सिक्खों ने मुग़ल सत्ता के उन्मूलन हेतु सशस्त्र प्रतिरोध आरम्भ किया।

मध्यहिमालयी क्षेत्र भी मुग़ल प्रभुत्व से मुक्त होना चाहते थे,परन्तु वह मुग़ल सत्ता से प्रत्यक्ष टकराव भी नहीं चाहते थे। अतः उन्होंने मुग़ल सत्ता और मुग़ल प्रभुत्व का सशस्त्र प्रतिरोध रहे सिक्खों तथा उनके समर्थक गुज्जरों,जाटों और बंजारों के साथ सहयोग करना आरम्भ कर दिया।परन्तु वह उन प्रतिरोधियों की सफलता के प्रति सशंकित थे। अतः उन्होंने दुरुभि नीति अपनाई। वह मुग़ल शासकों के सर्मथन का भी दिखावा करते रहे और मुग़ल सत्ता के विरोधियों को सतुष्ट करने का भी प्रयास करते रहे। उन्होंने अपने द्वार मुग़ल शासकों और मुग़ल शासकों के विरोधियों दोनों के लिए ही खुले रखे।

मुग़ल सत्ता के प्रतिरोध के आरम्भिक दौर में यह पर्वतीय क्षेत्र जिसका पलड़ा भारी होता देख उसी की ओर झुक जाते थे। मुग़लशासकों द्वारा अपने विरोधियों के दमन हेतु कटिबद्ध होने तथा मुग़ल सेनाओं को प्राप्त हो रही अनवरत सफलताओं को देख कर अंततः जब उन्हें यह विश्वास हो गया कि मुग़ल सत्ता के प्रतिरोधियों को सफलता प्राप्त करना असम्भव है,तब वह दुरुभि नीति त्याग कर पूर्णतया मुग़ल शासकों के साथ आ गये।

*सन्दर्भ :*

१. सिंह,रणजोर कुंवर,तारीख़–ए–रियासत सिरमौर,पृ.२२९–२३०,१९११,इलाहाबाद.
२. देखें,बल,एस.एस. का आलेख,''अर्ली इयर्स ऑफ गुरू गोविन्दसिंह'',प्रोसीडिंग्स ऑफ द पंजाब हिस्ट्री कांग्रेस,पृ.६३–७८,१९६८,पटियाला.
३–४.देखें,ग्रेवाल,जे.एस.का आलेख,''गुरू गोविन्दसिंह और बहादुरशाह प्रथम,''इतिहास और विचारधाराः खालसा के तीन सौ साल,सम्पादक ग्रेवाल एवं बंगा,इन्दु,पृ.५४–५५, २००१,दिल्ली.
५.बन्दाबहादुर (लक्ष्मनदास/माधोदास बैरागी)के व्यक्तिव–कृतित्व के लिए देखें, गुप्ता, हरिराम, हिस्ट्री ऑफ सिक्खस, भाग२, पृ.२–३,१९३९, कलकत्ता.
६.आलम,मुज़फ्फर का आलेख''बन्दाबहादुर के नेतृत्व में सिक्ख विद्रोह'',इतिहास और विचारधाराःखालसा के तीन सौ साल,पृ.५८–५९.
७–८. सिक्ख हिस्ट्री फ्रॉम पर्शियन सोर्सेज़,सम्पादक ग्रेवाल,जे.एस.एवं हबीब,इरफान,पृ.१४७–१४८,२००१,दिल्ली.
९. डबराल,शिवप्रसाद,उत्तराखण्ड का इतिहास,भाग४,पृ.३३६,१९७७,दुगड्डा,गढ़वाल.
१०–११.आलम,मुज़फ्फर,द क्राइसेस ऑफ एम्पायर इन मुग़ल नॉर्थ इंडिया,पृ.१५६,१६३,१६७–१६८.
१२–१४.पांडे,बद्रीदत्त,कुमाऊँ का इतिहास,पृ.३०५–३०७,१९३७,अल्मोड़ा एवं आलम,मुज़फ्फर,वही,पृ.१६८,सन्दर्भ,१३६.
१५. चन्द्रा,सतीश,उत्तर मुग़लकालीन भारत का इतिहास,पृ.८६,१९७६,दिल्ली.
१६.–१७.आलम,मुज़फ्फर,वही,पृ.१६७,१६९.
१८.–१९.पांडे,बद्रीदत्त,वही,पृ०३११एवंएटकिन्सन,ई०टी०,हिमालयनगज़ेटियर(हिन्दीरूपान्तर),थपलियाल,प्रकाश,भाग२,खण्ड, २,पृ०३१४,२००३,देहरादून.

*प्रवेश कुमार*
*प्रवक्ता , इतिहास, विद्यादीप डिग्री कालेज,बिलासपुर,सहारनपुर,उ.प्र.*

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing



Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org